क़ुरआन हम कैसे पढ़ें ?

लेखक-
मौलाना इनायत उल्लाह सुब्हानी मदनी

अनुवाद - डॉ. रफ़ीक़ अहमद

किताब का नाम	:	क़ुरआन हम कैसे पढ़ें ?
लेखक	:	मौलाना इनायत उल्लाह सुब्हानी मदनी
हिन्दी अनुवाद	:	डा० रफ़ीक अहमद मुस्लिम इण्टर कालेज, फ़तेहपुर
मोबाइल	:	9451767474
हिन्दी एडीशन	:	2012
प्रतियाँ	:	500
पृष्ठ	:	20
कम्पोज़िंग	:	शाहनवाज़
प्रिन्टर्स	:	रहमान प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स आबूनगर–फ़तेहपुर
क़ीमत	:	दुआये ख़ैर

मिनजानिब

ख़िज़रा लाइब्रेरी

(इस्लामी किताबों का मर्कज़)

सय्यदवाड़ा, फ़तेहपुर

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

मेरे प्यारे नौजवानो! क़ुरआन पाक हमारे मेहरबान रब का भेजा हुआ कलाम है, यह कलाम दरअस्ल हमारे नाम उसका पैग़ाम है, इस पैग़ाम में उसने सीधे तौर से हमें सम्बोधित किया है, इसमें हमें इस ज़मीन पर जीने का सलीक़ा सिखाया है, अपनों के साथ, ग़ैरों के साथ, सारे इन्सानों के साथ हम कैसे रहें? लोगों के साथ हमारे मामलात और ताअल्लुक़ात का तरीक़ा क्या हो? खुद अपने रब के साथ हमारा क्या अन्दाज़ हो? उसने हम पर जो उपकार और एहसान किये हैं, उनका शुक्र कैसे अदा करें? इस दुनिया में हम एक अच्छी ज़िन्दगी कैसे गुज़ारें, किस तरह हम खुश रहें? किस तरह दूसरों को खुश रखें? किस तरह अपने रब को खुश रखें? इस ज़िन्दगी के बाद दूसरी ज़िन्दगी आने वाली है, उस ज़िन्दगी की खुशियां हम कैसे हासिल करें? उसके लिए हमें क्या करना होगा, किन कार्यों को अपनाना होगा और किन कार्यों से बचना होगा? यह सारी बातें विस्तार से हमारे रब ने क़ुरआन में बता दी हैं।

चन्द लफ्ज़ों में हम यूँ कह सकते हैं कि क़ुरआन पाक हमारी पूरी ज़िन्दगी का दस्तूर और विधान है, या अमली निज़ाम है, जो हमारे रब ने हमारे लिए बनाकर भेजा है, इस निज़ाम की पैरवी पर ही हमारी कामयाबी निर्भर है, हमारी सारी खुशियां और सारी तरक्क़ियाँ इसी से वाबस्ता (सम्बद्ध) हैं, इस लिहाज़ से देखा जाये तो क़ुरआन पाक का पढ़ना, समझना और इस पर अमल करना हमारे लिए कितना ज़रूरी हो जाता है।

इसीलिए हमारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया है, तुम में सबसे अच्छे लोग वह हैं ''जो क़ुरआन पाक सीखें और दूसरों को सिखायें'' आपने यह भी फ़रमाया ''अल्लाह तआला इस किताब के ज़रीये कुछ लोगों को बुलन्दी अता करता है और कुछ लोगों को पस्ती में फेंक देता है''।

ज़ाहिर है बुलन्दी उन्हें अता होती है जो इस किताब को सीने से लगाते हैं, उसे अपने दिल में बसाते हैं, और उसकी रोशनी में अपनी ज़िन्दगी का सफर तय करते हैं, और पस्ती में वह गिरते हैं जो इस किताब की उपेक्षा और इसके आदेशों की अवहेलना करते हैं, जो अज्ञानता और जिहालत के अंधेरे में भटकते और मनमाने तरीक़े से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। इस तरह ख़ुद भी नुकसान उठाते हैं, दूसरों को भी नुकसान पहुंचाते हैं। खुद भी बर्बाद होते हैं और दूसरों को भी बर्बाद करते हैं।

मेरे प्यारे अज़ीज़ो! अगर हम अल्लाह व रसूल की निगाह में अच्छे इन्सान बनना चाहते हैं, और अगर हम दुनिया व आख़िरत की बुलन्दियां और खुशियां हासिल करना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि हम क़ुरआन पाक को शौक और लगन से पढ़ें, उसे अच्छी तरह समझें और उसके अनुसार अपनी ज़िन्दगियों को बनायें और अपने अख़लाक को संवारें।

यक़ीनन तुम यहां जानना चाहोगे कि उसके लिए हमें क्या करना होगा ? और किन बातों का ख्याल रखना होगा ।

सबसे पहली और बुनियादी बात यह कि हम क़ुरआन पाक को एक महान बल्कि सबसे महान कलाम समझें, हम यह समझें कि इस धरती पर कोई दूसरी ऐसी किताब नहीं है, जो इस किताब की जगह ले सकती हो और इससे हमें बेनियाज़ (निस्पृह) कर सकती हो।

क़ुरआन पाक हमें दुनिया की सारी किताबों से बेनियाज़ कर सकता है, मगर दुनिया की कोई किताब हमें क़ुरआन पाक से बेनियाज़ नहीं कर सकती, दुनिया व आख़िरत की सारी कामयाबियां और सारी बुलन्दियां इसी किताब से वाबस्ता हैं।

जब तक मुस्लिम उम्मत इस किताब से वाबस्ता रही, दुनिया की सारी क़ौमों में सर बुलन्द रही, इज़्ज़त व हुकूमत और इकबाल मन्दी इस पर छाई रही और वह ज़िन्दगी के हर मैदान में दिन दूनी रात चौगुनी

तरक़्क़ी करती रही, मगर जब उसने क़ुरआन पाक की तरफ पीठ फेर ली, और खुदाई इल्म के बजाये इन्सानी उलूम (मानव ज्ञान) को अपनी तवज्जो का केन्द्र बना लिया, जब उसकी ज़िन्दगी के सारे क्षेत्रों से क़ुरआन पाक बेदख़ल हो गया और ज़्यादातर जाहिली उलूम (इस्लाम विरोधी शिक्षायें) उसके दिल व दिमाग़ पर छा गये, और वही उसकी संस्कृति एवं सभ्यता का आधार बन गये तो सुरइया से ज़मीन पर आस्मान ने हम को दे मारा और हमारी हालत पर यह शेअ्र सच साबित हुआ।

न ख़ुदा ही मिला, न विसाले सनम
न इधर के रहे न उधर के रहे ।

किताबे इलाही की यह अज़मत व हैसीयत अच्छी तरह हमारे दिल व दिमाग़ में हर वक़्त रहनी चाहिये ताकि हम उसे अपनी ज़िन्दगी में वह मुक़ाम दे सकें जिसका वह पात्र है और ताकि इस ग़लती की भरपाई कर सकें, जो हमारे अगलों से हो चुकी हैं और जिसका दुष्परिणाम बाद की नस्लों ने भुगता, और आज तक भुगत रही है।

मिल्लत के प्यारे बेटो ! दूसरी बात जो तुम्हारे करने की है, वह यह कि क़ुरआन पाक को कभी सिर्फ अज्र व सवाब की नीयत से न पढ़ो, न बर्कत हासिल करने की नीयत से पढ़ो। उसे हमेशा इस नीयत से पढ़ो जिस नीयत से अल्लाह के रसूल सल्ल० पढ़ते थे, जिस नीयत से आप सल्ल० के सहाबा-ए-कराम रज़ि० पढ़ते थे।

सहाबा-ए-कराम क़ुरआन पाक को अज्र व सवाब या बर्कत हासिल करने की नीयत से नहीं पढ़ते थे, वह हमेशा इसे इस जज़्बे से पढ़ते थे कि उसके इल्म व अमल को अपने अन्दर उतार लें, चुनांच रिवायतों में आता है कि वह एक बार में बहुत सा क़ुरआन जान लेने की कोशिश नहीं करते थे, बल्कि नबी सल्ल० से एक बार में ज़्यादा से ज़्यादा दस आयतें पढ़ते थे जब इन दस आयतों को अच्छी तरह अपने

दिलो-दिमाग़ में उतार लेते और अपनी सीरत व किरदार (चरित्र एवं आचरण) में उन्हें सजा लेते तब वह आप सल्ल० से दूसरी दस आयतें सीखते, और उनके साथ भी वैसा ही करते जिस तरह पिछली दस आयतों के साथ किया था।

सहाबा-ए-कराम रज़ि० क़ुरआन पाक को इसी तरह पढ़ते थे वह यह जानते थे कि क़ुरआन पाक को अल्लाह ने ''नूर'' यानी रोशनी कहा है, वह नूर हमारे पास इसलिए आया है ताकि हमारे दिल व दिमाग़ को प्रकाशमान और हमारी ज़िन्दगियों को रोशन कर दे, लिहाज़ा इससे हमारे दिल व दिमाग़ को प्रकाशमान और हमारी ज़िन्दगियों को रोशन होना चाहिए, न सिर्फ हमारी ज़िन्दगियों को बल्कि पूरे इन्सानी समाज को रोशन होना चाहिए।

मेरे अज़ीज़ नौजवानों ! सहाबा-ए-कराम के यहां अज्र व सवाब की नीयत से, या बर्कत हासिल करने की नीयत से क़ुरआन पाक पढ़ने का रिवाज कभी नहीं रहा, यह रिवाज और परम्परा मुसलमानों में उस वक़्त शुरू हुई जब क़ुरआन पाक पर अमल करने, और उसके मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगियों को बदलने और संवारने का जज़्बा खत्म हो गया। जब उनके अन्दर से यह समझ व शऊर खत्म हो गया कि अल्लाह तआला ने हमें इस किताब का अमीन (रखवाला) बनाया है, ताकि इस अमानत और धरोहर को दूसरों तक पहुंचायें, इसकी शिक्षाओं को हम सारी दुनिया में बांट दें और उसकी रोशनी से सारी दुनिया को रोशन करें।

मेरे प्यारे अज़ीज़ो ! अज्र व सवाब या बर्कत हासिल करने की नीयत से क़ुरआन पाक पढ़ने का मतलब इसके अलावा और कुछ नहीं होता कि हमने क़ुरआन पाक की अहमियत और उसकी अज़मत को समझा नहीं, हमने इस मक़सद को ही नहीं समझा जिसके लिए हमारे रब ने यह क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया है, यह क़ुरआन तो ऐसी किताब है,

जिसे कोई समझ के पढ़ ले तो उसकी आंखों की नींद उड़ जाये और दिल बेचैन हो जाये, वह बेख़बरी और बेहोशी की ख़ानकाहों से निकल कर जिद्दोजेहद और अमल के मैदानों में आ खड़ा हो और हर उस पहाड़ से टकरा जाने के लिए बेचैन हो जाये जो इस क़ुरआनी मिशन के लिए रुकावट हो।

मेरे प्यारे अज़ीज़ो ! अगर तुम अज्र व सवाब के ख्वाहिश मन्द हो और वह रहमत व बर्कत की तमन्ना रखते हो तो अज्र व सवाब और रहमत व बर्कत क़ुरआन पाक के अल्फाज़ में नहीं बल्कि उस मिशन और उस निज़ाम (व्यवस्था) में है, जिसकी तरफ क़ुरआन पाक दावत देता है। इसी मिशन को आम करने के लिए और उसी निज़ाम को क़ायम करने की राह में हमारे हादी व रहबर हज़रत मुहम्मद सल्ल० ताइफ़ की गलियों में लहूलुहान (रक्त रंजित) किये गये, इसी निज़ाम को क़ायम करने की जेद्दोजेहद में बद्र व हुनैन की जंगे हुईं, और फिर बाद में इसी मिशन को आम करने के और उसी निज़ाम को क़ायम करने की राह में जामे शहादत के इतने दौर चले, और क़ुरआन पर जान देने वालों के इतने हाथ और इतने सर कलम हुये कि उन्हें शुमार करना किसी बड़े से बड़े गणितज्ञ के बस की बात नहीं। बदक़िस्मती से आज हमारी सारी तवज्जो और दौड़-धूप क़ुरआन ख्वानी पर होती है, उसके मआनी और मतलब पर नहीं, उसके मिशन पर नहीं, उसके निज़ाम पर नहीं, उसके पैग़ाम पर नहीं, हमारी यह हालत बड़ी ही खौफनाक है, हम इस हालत में क़ुरआन पाक से कटे हुये भी नहीं, इससे जुड़े हुये भी नहीं इसके दोस्त भी नहीं, और इसके दुश्मन भी नहीं।

अपनी इस हालत पर हम चाहे संतुष्ट हों और चाहे हमारी पूरी मुस्लिम क़ौम संतुष्ट हो, मगर खुद वह क़ुरआन संतुष्ट नहीं जिसके लिये हम यह सारे जश्न करते हैं, आज क़ुरआन पाक हमारे ख़िलाफ फ़रियाद कर रहा है, वह ज़बरदस्त फ़रियाद कर रहा है, मगर अफ़सोस कि हमारे

पास वह कान नहीं जो उसकी फ़रियाद को सुन सकें। और अगर किसी के पास सुनने वाले कान हों तो वह बड़ी आसानी से यह फ़रियाद सुन सकता है, देखो यह क़ुरआन पाक अपनी ज़बाने हाल से कितनी दर्द भरी फ़रियाद कर रहा है।

यह मुझ से अक़ीदत के दावे
कानून पे राज़ी ग़ैरों के
यूं भी मुझे रुसवा करते हैं
ऐसे भी सताया जाता हूँ
किस बज़्म में मेरा ज़िक्र नहीं
किस उर्स में मेरी धूम नहीं
फिर भी मैं अकेला रहता हूँ
यां मुझ सा कोई मज़लूम नहीं

मेरे अज़ीज़ो और दोस्तो ! क़ुरआन पाक की कोई आयत बिना सोचे-समझे मत पढ़ो, ग़ौर व तदब्बुर (चिन्तन-मनन) के साथ एक-दो आयत पढ़ना, उस पर ठहरना, उससे असर क़ुबूल करना, उसकी रोशनी में अपना जायज़ा लेना, आइन्दा के लिए अपने रब से नया अहदव-मीसाक़ (प्रतिज्ञा एवं वचन बद्धता) करना और उससे अमल की तौफ़ीक़ (शक्ति) मांगना बिला सोचे-समझे पूरा क़ुरआन पाक पढ़ने से कहीं बेहतर है, यही वजह है हमारे बुज़ुर्ग और बड़े लोग एक-एक आयत को इतनी इतनी देर तक पढ़ते रहते थे जितनी देर में कोई पढ़ने वाला पूरा क़ुरआन पाक पढ़ सकता है। हज़रत अबू ज़र रज़ि० से रिवायत है वह फ़रमाते हैं, नबी सल्ल० ने एक रात यह आयत पढ़ी -

اِنۡ تُعَذِّبۡهُمۡ فَاِنَّهُمۡ عِبَادُکَ وَاِنۡ تَغۡفِرۡ لَهُمۡ فَاِنَّکَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ○

(सूरह अल मायदा– आयत 118)

(अगर तू उन्हें सज़ा दे, तो तू उस पर पूरी तरह कादिर है, क्यों कि यह

सब तेरे ही बन्दे हैं, और अगर तू उन्हें माफ़ करना चाहे तो तुझे कोई रोकने वाला नहीं, क्योंकि कूव्वत व हिक्मत का मालिक तू ही है)

इसी आयत को आप सल्ल० नम आंखों के साथ रात भर पढ़ते रहे, बार-बार दुहराते रहे, यहां तक कि सुबह हो गयी।

अब्बाद कि हमज़ा एक बुज़ुर्ग ताबिई थे, वह फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत इस्मा बिन्त अबी बक्र रज़ि के घर गया तो देखा वह एक आयत पढ़ने में मशगूल (तल्लीन) हैं, यह वह आयत थी जो जन्नत में जन्नतियों की ज़बान पर जारी होगी।

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَ وَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ (सूरह तूर– आयत 27)

(अल्लाह ने हम पर फ़ज़्ल फरमाया और जहन्नम की झुलसा देने वाली हवाओं के अज़ाब से बचा लिया।)

मैं कुछ देर खड़ा रहा, वह बार-बार यह आयत पढ़ रही थी, जहन्नम से पनाह मांग रही थी, और जन्नत की दुआ कर रही थी।

अब्बाद कहते हैं! मुझे अन्दाज़ा हुआ, यह कैफ़ीयत जल्द खत्म होने वाली नहीं, चुनांचे मैं बाज़ार चला गया, वहां जो काम था वह काम किया, फिर वापस आया तो देखा वह अभी तक उसी आयत में मशगूल हैं वह बार-बार आयत पढ़ रही हैं, जहन्नम से पनाह मांग रही है, और जन्नत की दुआ कर रही हैं।

हज़रत तमीम दारी रज़ि० एक बुज़ुर्ग सहाबी हैं इन्होंने एक रात यह आयत पढ़ी-

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَا لَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَوَاءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ط سَاءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ○

(सूरह अल जासिया– आयत 21)

(वह लोग जो बेख़ौफ़ बुराइयां कर रहे हैं, क्या उन्होंने यह समझ रखा है कि हम उन्हें उन लोगों की तरह कर देंगे जो ईमान लाये और अच्छे काम

किये, जिनका मरना और जीना बराबर है कितनी बुरी बात है जो यह सोचते हैं)

हज़रत तमीम दारी रज़ि० की रात भर यह कैफीयत रही कि वह यही आयत बार-बार पढ़ते रहे यहां तक कि सुबह हो गयी।

ये कुछ वाक़ियात हैं वरना इस तरह के वाक़ियात की कमी नहीं, रसूलुल्लाह सल्ल और सहाबा ए कराम की आमतौर से यही कैफीयत (मनोस्थिति) थी, क़ुरआन पाक से इसी गहरे सम्बंध ने और इस संबंध के नतीजे में एक-एक आयत पर ग़ौर व तदब्बुर (चिन्तन-मनन) और उससे पड़ने वाले असरात की कैफीयत ने उनकी रग़ों में मुहब्बते इलाही की बिजलियां दौड़ा दी थीं, दीन को क़ायम करने और इस्लाम को ग़ालिब और प्रभावी बनाने के लिए उनके अन्दर जुनूनी और दीवानापन की कैफीयत पैदा कर दी थी, वह जुनूनी कैफीयत जिससे टकराकर उस वक़्त की तमाम ताकतें चूर-चूर हो गयीं थीं। और देखते-देखते कुफ़्र के महलों में धूल उड़ने लगी।

मेरे प्यारे बेटों ! आज ज़रूरत है कि हम क़ुरआन पाक की इस इन्क़िलाबी क़ूव्वत (क्रांतिकारी शक्ति) को महसूस करें, क़ुरआन की इस इन्क़िलाबी क़ूव्वत को हम उसी वक़्त महसूस कर सकते हैं जब हम उसे अपने दिल व दिमाग़ में बसायें, अपनी तनहाइयों में उसे गुनगुनायें और उसी की लज़्ज़त और मिठास को महसूस करें जैसे सहाबा-ए-कराम महसूस करते थे।

यहां इस बात को स्पष्ट करना ज़रूरी है कि क़ुरआन पाक पर ग़ौर व तदब्बुर करने, या उसे गुनगुनाने और उसकी मिठास महसूस करने के लिए अरबी जानना शर्त नहीं है, अगर हम अरबी जानते हैं तो इससे अच्छी बात क्या है ''नूरून अला नूर'' यानी बहुत ही मांगलिक और शुभ है लेकिन अगर नहीं जानते हैं तो इससे ग़ौर व तदब्बुर (चिन्तन-मनन) और क़ुरआन पाक से लज़्ज़त हासिल करने का दरवाज़ा

बन्द नहीं हो जाता।

एक ग़ौर व तदब्बुर वह होता है, जिसके लिए अरबी भाषा में महारत ज़रूरी है, मिसाल के तौर पर किसी आयत का सही मफ़हूम (भावार्थ) निर्धारित करने के लिए या उसके उस्लूब (शैली) की खूबियां या बारीकियां समझने के लिये या आयतों की नज़्म (क्रमबद्धता) के अन्दर उलूम व मआरिफ़ (ज्ञान-विज्ञान) के जो कीमती खज़ाने अल्लाह तआला ने रख दिये हैं उनका सुराग लगाने के लिए अरबी भाषा व साहित्य में महारत ज़रूरी है। ग़ौर व तदव्वुर की एक दूसरी किस्म वह होती है जिसका अरबी जानने से कोई ताल्लुक नहीं, इसके लिए सोचने वाला दिमाग़ और असर क़ुबूल करने वाला दिल काफी होता है मिसाल के तौर पर क़ुरआन पाक की एक आयत है-

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ○

(सूरह इब्राहीम– आयत 34)

(अगर तुम अल्लाह की नेमतों को शुमार (गणना) करो तो तुम उन्हें शुमार नहीं कर सकते, बिला शुब्हा इन्सान बड़ा ही ज़ालिम और नाशुक्रा है)

यह एक ऐसी आयत है जिसका सादा सा अनुवाद जान लेने के बाद कोई भी इस पर ग़ौर कर सकता है, और इस तरह ग़ौर कर सकता है कि वह हफतों, महीनों इस पर ग़ौर कर सकता है कि वह हफ़्तों, महीनों उस पर ग़ौर करता रहे और उसके ग़ौर व तदव्वुर का सिलसिला खत्म होने पर न आये, ज़ाहिर है जब अल्लाह तआला की नेमतों की कोई सीमा नहीं तो ग़ौर व फिक्र करने वाले के ग़ौर व फ़िक्र का सिलसिला भी उतना ही लम्बा हो सकता है। इस आयत पर ग़ौर करने के लिए अरबी भाषा में माहिर होना शर्त नहीं, इसके लिए दिल की बेदारी (जागरुकता) फितरत की शुद्धता, तबीअत की पवित्रता और एहसान करने वाले के लिए एहसान मानने का जज़्बा वांछित है।

एक दूसरी आयत है –

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الۡاَلۡبَابِ○

(सूरह अल इमरान– आयत 190)

(निःसंदेह आस्मानों व ज़मीन की रचना में, और रात व दिन के बारी बारी आने-जाने में बड़ी निशनियां है बुद्धिमानों के लिए)

यह एक ऐसी आयत है जिसका सादा अनुवाद किसी से सुनकर या किसी अनुदित क़ुरआन में देख कर कोई भी उस पर ग़ौर कर सकता है और इस ग़ौर के नतीजे में कदम-कदम पर अल्लाह तआला की कुदरत के जलवे देख सकता है, और ईमान व यक़ीन की कैफीयतों से परिपूर्ण हो सकता है और अगर कोई ऐसा व्यक्ति है जो फल्क़ियात (Astronomy) या इल्मुल तबक़ातुल अर्ज़ (Geology) का इल्म रखता है, तो वह तो इस आयत की व्यापकता और गहराइयों में इतनी दूर तक जा सकता है, जिसका बड़े-बड़े उल्मा (धर्म गुरू) कभी कल्पना भी नहीं कर सकते।

मेरे अज़ीज़ो और दोस्तो ! यह दो मिसालें हैं, इन्हीं दो मिसालों पर पूरे क़ुरआन पाक की कल्पना कर सकते हो। अल्लाह तआला ने यह क़ुरआन सभी के लिए नाजिल किया है और सबको गौर व फिक्र (चिन्तन-मनन) की दावत दी है। हरेक अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार गौर व फिक्र करेगा, और तभी इससे फ़ायदा उठा सकेगा, ग़ौर फिक्र के बग़ैर क़ुरआन पाक से फ़ायदा उठाना मुम्किन नहीं।

बदक़िस्मती से आम विद्यार्थियों एवं नौजवानों, बल्कि आम मुसलमानों के ज़ेहनों में यह बात बैठी हुई है कि यह क़ुरआन पाक सबके समझने की चीज़ नहीं है, यह एहसास बहुत ही ग़लत और अत्यन्त भयानक है, इस सोच ने हमें बहुत नुकसान पहुंचाया है, उसने हमारी मिल्लत को क़ुरआन पाक से दूर करने में अत्यन्त भयानक रोल अदा किया है, इस सोच से हम जितनी जल्दी मुक्त हो सकें बेहतर है।

मेरे अज़ीज़ो और दोस्तो ! अल्लाह की किताब को जितना पढ़ सकते हो, पढ़ो, इस पर जितना ग़ौर व फिक्र कर सकते हो गौर व फिक्र करो, इससे जितना करीब होगे, उतना ही माला-माल होगे बस शर्त यह है कि इससे तुम्हें सच्ची मुहब्बत हो, इसके आदेशों और हिदायतों पर अमल करने का जज़्बा हो, इसके शिक्षाओं के मुताबिक़ अपने आपको बदलने और अपने तौर-तरीके को संवारने का हौसला हो।

मेरे अज़ीज़ो और दोस्तो ! कभी यह कह कर अपने आपको या दूसरों को बहकाने की कोशिश न करना, कि क़ुरआन पाक पढ़ने का तो बहुत दिल चाहता है, मगर क्या करें सुबह से शाम तक एक मिनट खाली नहीं। कामों का इतना ढेर रहता है कि सांस लेने की फ़ुरसत नहीं मिलती। आज कल यह बीमारी बहुत आम है, इस तरह की बातें आमतौर से लोग कहते हैं, और बड़ी संजीदगी और गम्भीरता से कहते हैं। इस तरह की बातें करना क़ुरआन पाक की तौहीन है, अपने रब के साथ खुली हुई उदंडता है, और उसकी नेमतों की साफ-साफ नाशुक्री है।

मेरे अज़ीज़ो ! वक़्त क्या चीज़ है ! वक़्त ज़िन्दगी का ही दूसरा नाम है, यह ज़िन्दगी हमें किसने दी है ? ज़िन्दगी की चमक-दमक और ज़िन्दगी की व्यस्ततायें किसने दी हैं ?

कितनी ना समझी की बात है कि जिसने हमें यह ज़िन्दगी, और ज़िन्दगी की यह चमक-दमक और व्यवस्थायें दी हैं उसी का पैग़ाम सुनने और उसी का कलाम पढ़ने के लिए हमारे पास वक्त न हो ।

यह सोच एक बहुत बड़ी बीमारी है, जो पूरी तरह से दुनिया परस्ती (भौतिकता) और आख़िरत में बेपर्वाइ का नतीजा होती है, जिस तरह मुम्किन हो इस बीमारी से छुटकारा पाने की कोशिश करनी चाहिए, उस तालीम या उस रिसर्च या उस कारोबार या उस व्यस्तताओं में कोई अच्छाई नहीं जो हमें खुदा और उसकी किताब से दूर कर दे, जो हमें इतनी फ़ुर्सत न दे कि हम अपने रब को याद कर सकें और इस किताब

को पढ़ सकें। यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिये कि इस दुनिया में हमें हमेशा नहीं रहना है, देर-सवेरे यहां से रुखसत हो जाना है, और जिस तरह इस दुनिया में खाली हाथ आये थे, बिल्कुल उसी तरह यहां से खाली हाथ जाना है, उस वक़्त अगर कोई चीज़ हमारे साथ जायेगी तो वह अल्लाह की किताब होगी, उस पर ईमान होगा, उसका एहतेराम होगा, उससे मुहब्बत होगी और उसकी पैरवी होगी।

इस किताब से तअल्लुक की बुनियाद पर ही वहां फैसले होंगे जिसने इस किताब को इज़्ज़त और अहमीयत दी होगी, खुदा उसे इज़्ज़त देगा, जिसने इससे बेपर्वाई और ग़फलत बरती होगी खुदा उसकी तरफ नज़र भी नहीं उठायेगा।

अगर आख़िरत का यह तसव्वुर हमारे ज़ेहन में ताज़ा रहे तो दुनिया की कोई व्यस्तता हमें क़ुरआन पाक से ग़ाफ़िल नहीं कर सकती, इस वक़्त न सिर्फ यह कि क़ुरआन पाक के लिए वक़्त में अच्छी ख़ासी गुंजाइश निकल आयेगी बल्कि उस वक़्त क़ुरआन पढ़ने में लज़्ज़त और मिठास हासिल होगी, और अजीबो-गरीब तरीके से उसकी सारी गांठे खुलने लगेंगी, उस वक़्त जब उसे लेकर पढ़ने बैठोगे, या नमाज़ में उसकी तिलावत करोगे तो उसे छोड़ने या नमाज़ को शार्ट करने देने का दिल नहीं चाहेगा, उस वक़्त उसी क़ुरआन के बारे में तुम्हारा यह एहसास होगा।

हटती ही नहीं अबतिरे जलवों से निगाहें
आंखों को बड़ी देर में आदाब नज़र आये

डा० इक़बाल रह० के बारे में मशहूर है कि जिन दिनों वह लाहौर में वकालत करते थे, वह बस महीने के शुरूआती दिनों में कोर्ट में केस लड़ते थे, बाकी बीस दिन अपनी इल्मी और दीनी कामो के लिए फ़ारिग़ रखते थे, वह ज़्यादा से ज़्यादा क़ुरआन पाक की तिलावत करते थे और घन्टों उस पर ग़ौर व फिक्र में डूबे रहते थे। वह कहते थे, दस दिनों में जितना कुछ मिल जाता है, वह पूरे महीने के लिए काफ़ी होता है, इससे

ज़्यादा कमा कर हमें क्या करना है ?

जिस वक़्त डा० इक़बाल ने अपनी वकालत के सिलसिले से यह फैसला किया था, और अपना यह मामूल और नियम बनाया था, वास्तव में बहुत से लोगों को इस पर आश्चर्य हुआ होगा, और कुछ ताज्जुब नहीं कि उनके बहुत से साथियों ने मज़ाक भी उड़ाया हो, मगर क्या इक़बाल का इस से कोई नुकसान हुआ ? अपने दीन और अपने क़ुरआन की मुहब्बत में उन्होंने जो त्याग और क़ुर्बानी दी, क्या इस त्याग और क़ुर्बानी ने उन्हें मुसलमानाने आलम की आंखों का तारा नहीं बना दिया ? उनके मेहरबान रब ने उन्हें जो प्रतिष्ठा और इज़्ज़त की चादर पहनाई, क्या दुनिया का बड़े से बड़ा खज़ाना इसकी क़ीमत बन सकता है ?

एक मर्दे मोमिन की यही शान होती है, वह दुनिया में कभी असन्तुलन का शिकार नहीं होता, वह दुनिया को आख़िरत की खेती समझता है, और इससे बस उतना ही लेता है, जितना लेना उसके दीन की तरक़्क़ी और उसकी आख़िरत की कामयाबी का ज़रीआ हो, या कम से कम उसके दीन व ईमान के लिए नुकसानदेह न हो और किताबे इलाही से उसकी दूरी का सबब न हो, और ऐसा करके वह कभी घाटे में नहीं रहता, उसका मेहरबान रब उसके नेक जज़्बात और भावनाओं की क़द्र करता है, और अपने विशेष कृपा से उसे इतना नवाज़ देता है कि वह सपने में भी नहीं सोच सकता था।

मेरे प्यारे अज़ीज़ो ! किसी इन्सान, या किसी क़ौम के बनने या बिगड़ने में रिज़्के हलाल (हलाल कमाई) और रिज़्के हराम (हराम कमाई) का बड़ा रोल होता है, रिज़्के हलाल हमेशा रहमतों और बर्कतों के भन्डार अपने साथ लाता है, इन्सानों और क़ौमों को अपने रब से क़रीब करता है, उनके अन्दर उसकी किताब और उसकी शरीअत से मुहब्बत पैदा करता है, इसके विपरीत रिज़्के हराम हमेशा तबाहियों और बर्बादियों का आधार साबित होता है, वह इन्सानों और क़ौमों के अन्दर बेहिसी, और

बेरहमी पैदा करता है, जिस इन्सान या जिस क़ौम को इसकी चाट लग जाती है, ज़िल्लत व रुसवाई और तबाही व बर्बादी उसकी किस्मत बन जाती है। यहां यह सवाल पैदा होता है कि यह रिज़्के हलाल और रिज़्के हराम है क्या ? इसका एक मतलब तो वह होता है जो तुमने फिक़्ह या मज़हबी किताबों में अकसर पढ़ा होगा, अकसर ख़ुत्बों और तकरीरों में सुना होगा, लिहाज़ा इसकी तफ़सील में जाने की ज़रूरत नहीं।

इसका एक मफ़हूम (भावार्थ) और भी होता है, जिस पर शायद तुमने कभी ग़ौर न किया हो या जिसकी तरफ किसी ने ध्यान न दिलाया हो, मगर वह बहुत अहम है, और इस क़ाबिल है कि इस को अच्छी तरह समझा जाये, और उसके लिहाज़ से बराबर अपना जायज़ा लिया जाये।

हर वह कारोबार, हर वह व्यवसाय, हर वह व्यापार हर वह पेशा जो आदमी को इस तरह अपनी जंज़ीरों में जकड़ ले, और इस तरह उसके दिल व दिमाग़ पर सवार हो जाये, कि वह अल्लाह को भूल जाये, वह पांच वक्तों की नमाज़ों, और दूसरी तमाम इबादतों से गाफ़िल हो जाये, वह किताबे इलाही की तिलावत और उसके अध्ययन का समय न निकाल सके, वह अपने बूढ़े माँ-बाप की ख़िदमत न कर सके, वह अपने बच्चों की सही तालीम व तर्बियत (शिक्षा-दीक्षा) का इन्तिज़ाम न कर सके, उसके ऊपर जो दूसरे फराइज़ (कर्तव्य) और हुकूक (अधिकार) आयद होते हैं, उनके लिए वक्त न निकाल सके, ऐसा हर कारोबार शरीअत की नज़र में ना पसन्दीदा और नाजाइज़ होता है, इससे हासिल होने वाला रिज़्क को कभी रिज़्के हलाल नहीं कहा जा सकता, चाहे ज़ाहिरी तौर पर वह बिल्कुल साफ-सुथरा नज़र आता हो, और उसमें किसी ऐसे अमल का तनिक संदेह भी न पाया जाता हो जिसको शरीअत ने हराम ठहरा दिया हो।

हर वह रिज़्क जो एक मुसलमान के ज़मीर (अन्तरात्मा) को मुर्दा कर दे, उसे दीनी लिहाज़ से बेहिस बना दे, उसे अपनी ज़िम्मेदारियों से

ग़ाफ़िल कर दे और जो आख़िरत में उसके लिए रुसवाई और पछतावे का सबब बने, वह रिज़्क एक मुसलमान के लिए कभी हलाल नहीं हो सकता।

ऐ ताइरे लाहूती उस रिज़्क़ से मौत अच्छी
जिस रिज़्क़ के आती हो परवाज़ में कोताही

मेरे प्यारे अज़ीज़ो ! इसी कारोबार और इसी रिज़्क़ पर हर उस तालीम और हर उस रिसर्च को भी सोच सकते हो जो तुम्हे अल्लाह की किताब से ग़ाफ़िल कर दे, और तुम्हे इस काबिल न छोड़े कि तुम अल्लाह की किताब के लिए वक़्त निकाल सको, और उसका तुम पर जो हक़ होता है, इस हक़ को अदा कर सको। अल्लाह की किताब को नज़र अन्दाज़ करके कोई भी इल्म हासिल किया जाये, वह कभी भी हमारी कामयाबी का ज़रीआ नहीं बन सकता, वह न हमें इस दुनिया में इज़्ज़त दे सकता है न आख़िरत की रुसवाई से बचा जा सकता है।

आज मिल्लते इस्लामिया किन हालात से गुज़र रही है, अपने मुल्क हिन्दुस्तान में किन हालात से ग्रस्त है, हिन्दुस्तान से बाहर पूरी दुनिया में किन परिस्थितियों से जूझ रही है, गिरावट और बदहाली की वह कौन सी हालत है, जिसका वह सामना नहीं कर रही है?

क्या यह सारी गिरावटें और बदहालियां इस वजह से हैं कि वह साइंस और टेक्नोलाजी में पीछे है? क्या इस वजह से है कि इसके अन्दर इन्सानी उलूम (मानव ज्ञान) के माहिरों की कमी है ? दुनिया के हालात पर निगाह रखने वाले अच्छी तरह जानते हैं कि ऐसी कोई बात नहीं है, मुस्लिम उम्मत में हर मैदान के बड़े-बड़े धुरंधर मौजूद हैं, जो दूसरी क़ौमों से किसी हैसीयत से पीछे नहीं है। आज योरोप, अमरीका, आस्ट्रेलिया, कनाडा के बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में जाकर देखो, एक से एक मुस्लिम प्रोफेसर्स तुम्हें मिलेंगे, जो दूसरी क़ौमों के प्रोफेसर्स से किसी हैसीयत से पीछे नहीं होंगे, उनकी रसदगाहों (वेधशालाओं) और एटेमी

तजुर्बागाहों (Atomic Research Centres) में जाकर देखो, एक से एक मुस्लिम साइंटिस्ट और माडर्न टेक्नोलाजी के माहिर मिलेंगे, जो किसी लिहाज़ से दूसरी क़ौमों से कमतर नहीं होंगे, और ऐसे लोग दस बीस की तादाद में नहीं, हज़ारों की तादाद में मिलेंगे।

मगर आह ! यह हज़ारों मुस्लिम प्रोफेसर्स और मुस्लिम विशेषज्ञ वह होंगे जिनकी अकसरीयत किताबे इलाही से बेपर्वा बल्कि बेज़ार होगी, जिन्हें अपने दीन और अपनी मिल्लत से कोई दिलचश्पी नहीं होगी जो अपने आपको एक मुस्लिम की हैसीयत से पेश करने से भी परहेज़ करते होंगे।

यह एक हक़ीक़त है कि आज मुस्लिम विद्वानों और मुस्लिम विशेषज्ञों की बेहतरीन सलाहियतें अपने दीन और अपने मिल्लत के काम नहीं आ रही हैं बल्कि अल्लाह के दुश्मनों के काम आ रही हैं जिसकी वजह इसके अलावा और कुछ नहीं कि उन्होंने क़ुरआन पाक नहीं पढ़ा, उन्होंने अल्लाह की किताब को नहीं पहचाना और अल्लाह की किताब को न पहचान कर उन्होंने खुद अपने आप को नहीं पहचाना, अपने मन्सब और मुकाम को नहीं पहचाना, अपने उस बुलन्द मुक़ाम को नहीं पहचाना जिस पर उनके रब ने उन्हें पहुंचाया था।

मेरे प्यारे अज़ीज़ो ! इस बात को अच्छी तरह समझ लो कि हमारी इ़ज़्ज़त और ज़िल्लत पूरी तरह से क़ुरआन से वाबस्ता है, अगर क़ुरआन तुम्हारे हाथों में होगा, और मज़बूती से उसे पकड़े रहोगे तो मिट्टी को भी हाथ लगाओगे तो वह सोना बन जायेगी, लेकिन अगर तुमने क़ुरआन पाक की इ़ज़्ज़त से अपने आपको वंचित कर लिया तो फिर कोई चीज़ तुम्हे इ़ज़्ज़त देने वाली नहीं।

तुम दुनिया के सारे उलूम (विद्यायें) हासिल करो, कि इन सारे उलूम की ज़रूरत है, और उन सारे उलूम में फ़ायदे हैं, मगर यह बात कभी न भूलों कि यह उलूम तुम्हारे लिए उसी सूरत में इ़ज़्ज़त व

कामयाबी का ज़रीआ बन सकते हैं, जब कि तुम क़ुरआनी और इस्लामी जज़्बे के साथ उन्हें हासिल करो और क़ुरआन के मार्गदर्शन में उन्हे इस्तेमाल करो। इसके लिए ज़रूरी है कि पाबन्दी से क़ुरआन पाक को पढ़ो, उसकी एक-एक आयत पर ठहरो, और एक-एक आयत को समझने की कोशिश करो, वह आयत अगर तुम्हे कोई पैग़ाम देती है तो गम्भीरता और संजीदगी से उस पैग़ाम को सुनो, और उसके अनुसार अपने आपको बदल डालो, अकेले भी इस का अध्ययन करो और अच्छे साथियों के साथ बैठकर सामूहिक रूप से भी अध्ययन करो, और अगर अरबी नहीं जानते, तो उर्दू या हिन्दी या अंग्रेज़ी अनुवाद और तफ़सीरें (व्याख्यायें) अपने सामने रखो, उन अनुवादों और तफ़सीरों से अगर इत्मीनान हो तो तफसीर का इल्म रखने वाले आलिमों से फ़ायदा उठाओ, मगर जब तक उस आयत को समझ न लो चैन से न बैठो।

संक्षेप में यह कि किसी भी हालत में क़ुरआन पाक से ग़ाफ़िल न रहो, क़ुरआन पाक को अगर याद कर सकते हो तो याद भी करो, पूरा नहीं याद कर सकते तो जितना भी याद कर सकते हो तो याद करो कि इससे तुम्हारी रूह को इत्मीनान ओर दिल को सुकून हासिल होगा, और इससे उस पर ग़ौर करना उसके अर्थ एवं आशय को समझना और उन्हें सुरक्षित रखना आसान होगा।

मेरे प्यारे अज़ीज़ो ! क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला ने अपने नेक व बुज़ुर्ग बन्दों की यह खूबी बताई है कि जब उन्हें रहमान की आयतें सुनाई जाती हैं तो वह रोते हैं और सज्दे में गिर पड़ते हैं।

एक दूसरी जगह फ़रमाया, मेरी आयतों पर ईमान रखने वाले वह लोग हैं कि जब इन आयतों के ज़रीये उनकी याद दिहानी कराई जाती है तो वह सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने रब का गुनगान करते हैं और उससे मगफ़िरत (क्षमा) तलब करते हैं और वह गर्व एवं घमन्ड का तरीक़ा नहीं अपनाते हैं।

इससे मालूम हुआ कि क़ुरआन पाक की शान यह है कि जब इसकी आयतें पढ़े, या किसी को पढ़ते हुये सुने तो हम पर कंपकपी तारी हो जाये या कम से कम दिल पर उसका असर हो, यह एक सच्चे और ज़िन्दा ईमान की अलामत होती है लिहाज़ा क़ुरआन पाक पढ़ते वक़्त इन्तिहाई संजीदा होना चाहिये, इस दौरान में इधर-उधर की बातें नहीं करनी चाहिए न कोई ऐसा काम करना चाहिए जिससे वह प्रभावित हो।

यह अल्लाह का कलाम है, इसका हम जितना ज़्यादा एहतिराम करेगें, उतना ही ज़्यादा उसकी रहमत के पात्र होंगे। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे, हमें अपने मोमिन बन्दों और बुज़ुर्गों का वारिस (उत्तराधिकारी) बनाये, हमें क़ुरआन पाक का सच्चा आशिक बनाये, इसके एहकाम पर अमल करने और इसके पैग़ाम को सारे इन्सानों तक पहुंचाने का हौसला अता फरमायें।

(आमीन)